कश्मीर में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा, रोज-रोज का 'युद्ध' खत्म हो

जम्मू-कश्मीर के राजौरी सेक्टर में कार्यरत कैप्टन कपिल कुंडु अभी अपना तेइसवां जन्मदिन मनाने वाले थे कि गत रविवार राजौरी-पुंछ क्षेत्र में वे पाकिस्तानी गोलीबारी में शहीद हो गये। उनकी पूज्य मां सुनीता कुंडु ने आंसू पोंछते हुए कहा कि यदि उनका दूसरा बेटा भी होता, तो वे उसे भी सेना में भेजतीं। धन्य है ऐसा पुत्र और धन्य है ऐसी मां। लेकिन, सवाल इससे बड़े हैं- यह सब आखिर कब तक देश देखेगा, झेलेगा?

इससे पहले जम्मू-कश्मीर पुलिस ने गढ़वाल राइफल्स की यूनिट तथा उसके मेजर आदित्य के खिलाफ प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज की- हत्या और गोलीबारी के आरोप में। जम्मू-कश्मीर की विधानसभा में भाजपा विधायकों ने इसका जिक्र किया और रपट दर्ज करने को गलत बताया, लेकिन जम्मू-कश्मीर सरकार, राज्यपाल (जो देश की सेनाओं के सर्वोच्च प्रमुख राष्ट्रपति के प्रतिनिधि होने के नाते जम्मू-कश्मीर में सैनिकों के संरक्षक हैं), मुख्यमंत्री, सारे लोग एक तरह से सन्नाटा ओढ़े रहे। जम्मू-कश्मीर की मुख्यमंत्री ने जो कहा, उसका कोई अर्थ नहीं था। पत्थरबाजों पर दायर मुकदमे वापस लेना और देश की रक्षा के लिए प्राणों की बलि देने वाले जवानों तथा सेना की यूनिट पर धारा 302 का मुकदमा दर्ज करना, यह बताता है कि कश्मीर में कुछ ठीक नहीं हो रहा है।

हमने लेफ्टिनेंट उमर फैयाज तथा एसएसपी मुहम्मद अय्यूब पंडित की शहादत पर दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में श्रद्धांजलि और चिंतन सभा की थी, जिसमें दोनों शहीदों के चित्रों की भी प्रदर्शनी लगायी गयी थी। देश के लिए शहीद होने वाला चाहे पुलिसकर्मी हो या सेना का जवान, दोनों हमारे लिए श्रद्धेय हैं। इसमें जम्मू से सांसद तथा केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह तथा जम्मू-कश्मीर के उप-मुख्यमंत्री निर्मल सिंह भी उपस्थित हुए थे। हम सबने पुलिस तथा सैनिक शहीदों को एक साथ श्रद्धांजलि दी। लेकिन, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने सैनिकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर पाकिस्तान में जलसा करवा दिया। यह देश-विभाजक काम जम्मू-कश्मीर पुलिस ने क्यों किया? मेजर आदित्य के विरुद्ध 302 की धारा पूरे भारत की जनता और संविधान पर तमाचा है। जो इस पर सन्नाटा ओढ़े, उसको आप क्या कहेंगे?

हर रोज शहादत, हर रोज शोक संदेश, हर रोज श्रद्धा सुमन। यह देश का गौरव है कि यहां रणबांकुरे और देशभक्त नौजवान भारत मां की रक्षा के लिए कुर्बान होने को हरदम तैयार रहते हैं। लेकिन जरा सोचिये, सन 1947 में मिली खंडित-भारत की आजादी के तुरंत बाद से आज तक हम लगातार पाकिस्तान द्वारा लहू-लुहान किये जाते आ रहे हैं। कश्मीर का एक तिहाई गया, गिलगित बाल्टिस्तान गया, अक्साई चिन चीन के कब्जे में गया। चार युद्ध अलग और हर दिन के युद्ध अलग। गत सप्ताह में जालंधर में हिंद समाचार पत्र समूह द्वारा शहीद परिवारों की सहायता के लिए आयोजित कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित था। इस समूह के संपादक जगतनारायण जी और उनके पुत्र तथा संपादक रमेशचंद्र जी पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के शिकार हुए। इतना ही नहीं, 62 संवाददाता-रिपोर्टर-हॉकर भी शहीद हुए। वे हर साल शहीद परिवारों को मदद भेजते हैं। 1983 से अब तक 462 ट्रक राहत-सहायता सामग्री तथा 16 करोड़ रुपये से ज्यादा वितरित किये गये हैं।

यह जज्बा गौरवयोग्य है और इस पत्र समूह को लाखों-लाखों प्रणाम व साधुवाद। लेकिन, क्या यह एक शक्तिशाली देश की निशानी है? क्या चीन, जापान, रूस, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस- हर रोज के युद्ध, हर रोज के आतंकवाद, हर रोज होने वाले शहीदों की याद में श्रद्धांजलि समारोह करते रहते हैं? क्या शहादत एवं सीमावर्ती युद्ध- हर रोज का ना खत्म होने वाला यह सिलसिला होना चाहिए? आखिर वह दिन कब आयेगा, जब हर दिन किसी जवान, मेजर, कैप्टन की शहादत हमारी खबरों का आम, हर रोज का रुटीन हिस्सा ना बना करें? युद्ध होना है, तो एक दिन हो, लेकिन यह रोज-रोज का युद्ध खत्म हो। यह भूराजनीतिक विशेषज्ञों के लिए सोचने की बात है।

यह राजनेताओं के लिए भी सोचने की बात है। आखिर में जवान और अधिकारी हमारे-आपके घरों से ही तो सेना में जाते हैं। उनके लिए शहादत गौरव का विषय है। हम खुद सोचें कि हमारे लिए उनका इस तरह हर दिन शहीद होना- एक अभिभावक के नाते किसी निर्णायक क्षण तक पहुंचने वाला होना चाहिए या नहीं?

भारत पहले विदेशी आक्रमणों का शिकार हुआ- सदियों तक। फिर सीमा के दोनों ओर पड़ोसी देशों के हमलों का शिकार हुआ। भीतरी आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद एवं कश्मीर से उत्तर पूर्वांचल तक व्याप्त विद्रोह और अराजक तत्वों का खूनी खेल भारत को विकास के मार्ग पर एकजुट हो टिकने ही नहीं देता। भारत के जो संसाधन आम आदमी की जिंदगी बेहतर बनाने में लग सकते हैं, उनका एक बहुत बड़ा हिस्सा इन भीतरी एवं सीमावर्ती- हर दिन के युद्धों में लगता है।

क्या यह संभव नहीं कि सुरक्षा तथा आपसी सद्भाव की रक्षा के नाम पर अपने सारे मतभेदों को भुला करके देश में राजनीतिक मतैक्य बने और अपनी-अपनी विचारधाराओं तथा कार्यक्रमों की राजनीति को गौण रखते हुए ऐसी राष्ट्रीय सहमति उभरे, जहां सैनिक के सम्मान तथा नागरिक की रक्षा सर्वोपरि हो? आखिरकार रावण का हनन करने के बाद ही अयोध्या में दीवाली मनी थी- यह हम क्यों भूल जाते हैं?

यह ठीक है कि भारत ने अभी किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया, कभी किसी दूसरे देश की जमीन पर कब्जा नहीं किया, कभी किसी देश के भीतरी समाज को तोड़ने के लिए आतंकवाद को निर्यात नहीं किया, फिर भी भारत पर ही हमेशा हमले होते रहे। यह नियति बदलनी चाहिए, बदलनी ही होगी। इसे राष्ट्रीय एकजुटता और राष्ट्रीय मन की सामूहिक शक्ति का बल चाहिए।

मोदी सरकार के सामने यह एक चुनौती है- सीमाएं शांत रहें, कश्मीर से उत्तर-पूर्वांचल तक पसरा विद्रोही-हिंसाचार खत्म हो तो ही गरीबी-उन्मूलन तथा किसान के अभ्युदय का स्वप्न जल्दी एवं बेहतर ढंग से कामयाब होगा। पर क्या टुकड़ा-टुकड़ा राजनीति यह होने देगी? यही आज की सबसे बड़ी चुनौती है, केंद्र सरकार और जम्मू-कश्मीर सरकार दोनों के लिए।

ई-वॉलेट्स से बेहतर है भारत क्यूआरकोड एप्प, आजमा कर देखें

भारत सरकार कैशलेस इकोनॉमी या डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए ज़ोर-शोर से काम कर रही है। और हाल ही में सरकार ने भारत इंटरफेस फॉर मनी (भीम) एप्प भी लॉन्च किया था, जिसे यूज़र्स ने काफी इस्तेमाल किया। पर अब इस राह को और सुगम बनाने के लिए एक नया पेमेंट एप्प लॉन्च किया गया है। भारत क्यूआर कोड नाम के इस टूल के उपयोग करने पर आप बिना रु?वाइप मशीन के कार्ड से पेमेंट कर सकेंगे। भारत क्यूआर कोड एक सामान्य क्यूआर कोड की तरह है, जिसे देश की चार प्रमुख कार्ड पेमेंट कंपनियां, मास्टर कार्ड वीज़ा, नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया का रुपे कार्ड तथा अमेरिकन एक्सप्रेस ने मिलकर भारतीय रिजर्व बैंक के निर्देशों के अनुसार विकसित किया है।

इस नए भारत क्यूआर कोड नामक एप्प के द्वारा डिजिटल भुगतान किया जा सकेगा जिसके लिए अपने स्मार्टफोन में इसे ओपन कर मर्चेंट्स का क्यूआर कोड स्कैन करना होगा। इसके बाद आप पेमेंट कर सकते हैं। इसके साथ ही सभी बैंकों को अपने कस्टमर्स के डेबिट कार्ड डिटेल्स को इसके साथ इंटीग्रेट करना होगा जिससे यूज़र के अकाउंट की सीमित लिमिट को बढ़ाया जाएगा। क्यूआर कोड डेबिट कार्ड के लिए कॉमन इंटरफेस का काम करेगा। इन कार्ड्स में वीजा, मास्टर कार्ड और रुपे शामिल होंगे। इसके अलावा आधार कार्ड के जरिए किए जाने वाले पेमेंट्स और ट्रांस्फर भी क्यूआर कोड के जरिए किए जा सकेंगे। भारत क्यूआर कोड एप्प के ज़रिए यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) प्लेटफॉर्म से भी पेमेंट ऐक्सेप्ट किए जा सकेंगे। हालांकि बैंकर्स का कहना है कि शुरुआती दौर में भारत क्यूआर से वीज़ा, मास्टर कार्ड और रुपे को ही सपोर्ट करेंगे।

क्या है भारत क्यूआर कोड की खासियत?

अभी भारत में ज्यादातर बैंक अपने एप्प के ज़रिए एमवीज़ा क्यूआर कोड की सेवा देते हैं जबकि आरबीएल बैंक ऑनगो एप्प के ज़रिए मास्टरपास क्यूआर कोड की सेवा देते हैं। अगर मर्चेंट के पास एमवीज़ा क्यूआर कोड है तो आपके बैंकिंग एप्प में यह सुविधा होनी चाहिए। अगर आपके बैंकिंग एप्प में मास्टरपास क्यूआर कोड की सुविधा है और मर्चेंट के पास एमवीज़ा क्यूआर की सुविधा है तो आप पेमेंट नहीं कर सकते थे, लेकिन अब यह संभव है।

भारत क्यूआर कोड एप्प कई मायने में पेटीएम और दूसरे ई-वॉलेट्स से बेहतर है। इसकी खास बात यह है कि इसमें पेटीएम, मोबीक्विक, जियो मनी, फ्रीचार्ज आदि ई-वॉलेट कंपनियों के क्यूआर कोड को शामिल नहीं किया गया है।

कौन कर सकते हैं भारत क्यूआर कोड इस्तेमाल?

फिलहाल भारत क्यूआर कोड सुविधा का उपयोग देश के 15 बैंकों के ग्राहक ही कर पाएंगे। मास्टरकार्ड, वीज़ा तथा रुपे कार्ड धारकों को भी भारत क्यूआर कोड सुविधा का फायदा मिलेगा और जल्द ही इस सेवा के दायरे में अमेरिकन एक्सप्रेस भी आ सकता है। भारत क्यूआर कोड एप्प को इस्तेमाल करने वाले 15 बैंकों की सूची इस प्रकार से है-

एक्सिस बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, बैंक ऑफ इंडिया, सिटी यूनियन बैंक, डीसीबी बैंक, करुर वैश्य बैंक, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, आईडीबीआई बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, आरबीएल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, विजया बैंक और यस बैंक।

कैसे करें भारत क्यूआर कोड को इस्तेमाल?

बतौर ग्राहक, भारत क्यूआर कोड का उपयोग करने के लिए आपके पास ऊपर बताए गई 15 बैंकों की सूची में से किसी एक में खाता होना ज़रूरी है। इसके साथ ही आपके पास स्मार्टफोन भी होना चाहिए जिस पर आपको संबंधित बैंक का भारत क्यूआर कोड डाउनलोड करना होगा। आपके पास संबंधित बैंक का डेबिट, क्रेडिट या प्रीपेड कार्ड होना भी अनिवार्य है। यह क्यूआर कोड एप्प एंड्रॉयड, आईओएस तथा विंडोज़ मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम पर काम करेगा।

जानें भारत क्यूआर कोड के फायदे-

- कोई भी शख्स जिसके पास बैंक अकाउंट और स्मार्टफोन है, वो क्यूआर कोड के ज़रिए पेमेंट कर सकेगा। इसके लिए बैंकों को मर्चेंट्स के साथ करार करना होगा।
- पेटीएम की तरह किसी भी मर्चेंट्स के यहां आप क्यूआर कोड स्कैन करके पेमेंट दे पाएंगे।
- क्यूआर कोड के इस्तेमाल से आप डेबिट कार्ड स्वाइप करने से बच सकते हैं।
- आधार कार्ड आधारित पेमेंट सुविधा का लाभ भी लिया जा सकेगा।
- टाइम की भी बचत होगी।

अगर अब भी भारत क्यूआर कोड समझने में परेशानी हो रही है तो इसे ऐसे समझा जा सकता है जैसे कि अगर आप पेटीएम के ग्राहक हैं तो उसी मर्चेंट को पेमेंट कर सकते हैं जहां पेटीएम का क्यूआर कोड होगा। लेकिन भारत क्यूआर कोड वो सभी लोग इस्तेमाल कर सकते हैं जिनके पास डेबिट कार्ड्स हैं।